शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'जिन्दगीनामा' उपन्यास में प्रेम और ग्राम्य जीवन का संघर्ष

सरोज गौतम
एम.फिल.हिन्दी
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्यनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

आधुनिक युग में जब नारी ने साहित्यिक क्षेत्र में पुरूष का साथ देना आरंभ किया तो अनेक प्रश्न उठ खड़े हुए। कवयित्रियों अथवा लेखिकाओं को प्रारम्भ में एक प्रकार से उपेक्षा ही मिली। उन पर उंगलियाँ उठाई गई, तरह-तरह के आपेक्ष लगा गए, किन्तु स्त्री लेखिकाएं निर्विकार रूप से आरोपों व आक्षेपों की चिन्ता किए बिना साहित्यिक योगदान में जुटी रहीं और अपनी कृतियों से वाक देवी के भण्डार में वृद्धि की है। उनका यह प्रदेय आज प्रिज्म की भाँति सतरंगी आभा विखेर रहा है। आज महिला उपन्यास कारों द्वारा लिखित उपन्यास हिन्दी साहित्य में अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित कर रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में कृष्णा सोबती द्वारा लिखित 'जिंदगीनामा' उपन्यास में प्रेम और ग्राम्य जीवन की संघर्ष गाथा पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

हिन्दी कथा साहित्य के प्रारंभिक युग में लेखन के क्षेत्र में पुरुषों का वर्चस्व ही दिखाई देता है। किन्तु स्वातंयतोत्तर कथा साहित्य में महिलाएँ अन्य क्षेत्रों की भाँति ही कथा लेखन के क्षेत्र में भी अग्रिम पंक्ति में आ खड़ी हुई हैं। स्वातंत्र्योत्तरकालीन हिन्दी महिला उपन्यासकारों में जिन नामों का रूतबा है, उनमें कृष्णा सोबती नाम शीर्ष पर माना जाता है। आधुनिक खुले बेबाक और पंजाबी मस्ती से भरपूर लेखन की धनी कथा लेखिका सुश्री कृष्णा सोबती का जन्म पंजाब के जिला गु जरांवाला (अब पाकिस्तान) में 18 फरवरी 1925 ई. में हुआ। इनकी शिक्षा-दीक्षा लाहौर, शिमला एवं दिल्ली में हुई। 1 कृष्णा जी स्वतंत्र पेटी, स्वछन्द, फक्कड़ और गजब की निडर नारी होने के बावजूद इनके व्यक्तित्व में जो सादगी और सरलता है वह निश्चय ही अविश्वसनीय प्रतीत होती है। एक ओर लेखन और जीवन में दबंग है तो दूसरी ओर आचार-विचार में अभंग। यह एक ऐसी लेखिका हैं जिनके लेखन में सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रीय भावना, महादेवी वर्मा की आत्म वेदना और मन्नू भंड़ारी की नारी भावना का त्रिवेणी संगम इनके कथा साहित्य में देखने को मिलता है। इनकी औपन्यासिक रचनाओं में प्रेमचन्द की सामाजिकता, यशपाल की विद्रोहात्मकता और रेणु की आँचलिकता का अपने , अलग अंदाज से समन्वय दिखाई देता है।

इन सभी गुणों को देखने का दर्पण है 'जिन्दगीनामा' उपन्यास। इसमें कहीं-कहीं नारीजीवन के विभिन्न पहलुओं का बोधक चित्रण है तो कहीं पंजाबी जीवन के क्षेत्रीय रंग से सरोवर दृश्य पात्रों के माध्यम से दृष्टिगत होते हैं। इसके अलावा समाज , संस्कृति, परंपरा की

उत्पत्ति उनका विकास ये सब स्थितियाँ उपन्यास अपने कलेवर में समेटे हुए है।

इनके इस उपन्यास में लोक आस्था, रूढियाँ, रीति-रिवाज, तीज, त्यौहार, उत्सव गीत, नृत्य, परम्परा आदि देखा जा सकता है रिश्तों की पवित्रा एवं सद्भाव ग्राम परिवेश भी इस उपन्यास की अमूलनिधि है। कृष्णा जी ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से ग्रामीण परिवेश के परिवर्तन को भी रेखकिंत किया है, जिसके कारण ग्राम्य जीवन अहां ग्राम्य जीवन से आह , ग्राम्य जीवन में रूपांतरित हो गया है। यह उपन्यास ग्रामीण जीवन की अच्छी-बुरी समस्याओं एवं आपसी प्रेम संबंध एकता विश्वासों का प्रमाणिक विवेचन प्रस्तुत करता है। 'जिन्दगीनामा' किसी एक व्यक्ति या परिवार की कथा नहीं पंजाब के अचंल की कथा है।2

जिंदगीनामा उपन्यास का विश्लेषण

उपन्यासकार ने पंजाब के अतीत के वैभवशाली गौरव को उद्घाटित कर मानवीय जीवन में प्रेम के महत्व को रेखांकित उपन्यास के प्रारम्भ में एक लम्बी कविता के माध्यम से चित्रित किया है, वहीं यह कविता पंजाबी गांवों की नदियों जमीन, कुएँ, खेत, खलिहान, कच्ची राहे और खुरडरे रोड सभी की गरमाहट को अभिव्यक्ति देती है। प्रेम इस उपन्यास में एक मुख बिन्दु बनकर उपस्थित होता है। पंजाबी जीवन में प्रेम जिस प्रकार घुलमिल गया है , उसे कृष्णा सोबती ने हृद्रयस्पर्शी ढंग से अंकित किया है।

कृष्णा सोबती ने 'जिन्दगीनामा' में जन-साधारण की बुनियादी समस्याओं पर प्रकाश डाला है। पाँच नदियों का राज्य पंजाबी हरियाली से भरपूर है। खेतीबारी के अनुकूल वातावरण होते हुए भी पंजाब के अधिकतर किसान गरीब है। जमींदारों का शोषण ही गरीबी का मूल कारण है। किसानों की मेहनत से पंजाब धन-धान्य से सम्पन्न हो गया है, जबकि किसानों के घर में अभावों का अंधेरा है। हाड-तोड मेहनत करने के बावजूद किसान फसलों से वंचित रह जाते हैं। साहू के कर्जों को चुकाते-चुकाते पीढ़ी-दर पीढ़ी गुलामी में जीवन बिताते आ रहे हैं। कर्म इलाही , नजीर कक्कूखान वहियो (बगीचों) सब शाह साहिब ही में बंधे हैं। मुहम्मदीन के नजर में सूअर का नस्ल वाला यह कर्ज चीटीं की चाल से हाथी बनता जाता है। शाहों (शाहू) से कर्ज की त्रासदी यह है कि दिन दुगना रात चौगुना हो जाता है। भद्दी का कहना है "ढोर-डंगर तो कभी -कभार बच्छी-वच्छा देते हैं , उधार का सूद दिन रात जन्मता-बढता रहता है।"3 कर्ज के शिंकजे में पड़े मेहनती किसान धीरे-धीरे भूमिहीन मजदूरों में बदल जाते हैं। किसान को अपनी मेहनत का फल मिलता नहीं। मेहर अली इस के प्रति रोष प्रकट करता है, "दूध-मलाई धनाढ्य शाहू (शाहों) की और छाछ-लस्सी हमारी ओर लानत हमारी मेहनतों पर।"4 जमींदारी शोषण के प्रति आक्रोश होते हुए भी अपने परिवेश के कारण मौन रहने को वे विवश हैं। किसानों से मजदूर बन जाने वालों की अत्यंत शोचनीय स्थिति को कृष्णा सोबती ने चित्रित किया है।

समय के बदलने के अनुसार व्यवस्था के संबंधों में भी परिवर्तन आ जाता है। औपनिवेशिक शासन के अन्तर्गत नई जमींदारी में भूमि के सारे पिछले संबंध बदलने लगे। इसके साथ ही इंसानी रिश्ते भी सत्ताधारी वर्ग , ग्रामीण जनता के भाईचारे और प्रेम को तोड़ने का प्रयास करता रहा। गरीब किसानों को भी जाति और धर्म के नाम पर विभाजित करने की साजिश चलती रही। नई जमींदारी में किसानों का अस्तित्व नष्ट हो

रहा था। किसानों में अधिकांश मुसलमान थे। भूमिका का केन्द्रीकरण महाजनों , साहूकारों के हाथों में होने लगा था जो प्राय हिन्दू थे। आर्थिक स्तर का भेदभाव धर्माधारित भी मानने लगा। माँ करभरी के शब्दों से यह स्पष्ट है कि "अरी-हिन्दुओं को बहुत पैसा , बहुत बरतन, बहुत फल्लफैलाव"5 नसीब के अनुसार लहरे-बहरे और दौलत की बरकते ज्यादा हिन्दुस्तानी चोले की ही मालकी समझते चौधरी फतेहअली भी कहता है कि "अपने मुसली म दर्ज हो गए , किसानी फेहरिस्त में। अलबत्ता हिन्दुओं को घाटा जरूर रहा चलों, उनके पास धन दौलत काफी। " "इतना ही आया है न कि मुसलमान तीन हजार सलाना आमदानी पर मामला भरे तो चीन का हकदार बने उधर हिन्दू तीन लाख सलाना पर मामला देतों परची डाल सके। "6 कानून नियम कैसे अमीरों के पक्ष में चले जाते हैं, इस तथ्य को उपन्यास कार ने उद्घाटित किया है।"7

विभाजन का दर्द

'जिन्दगीनामा' पंजाब जनता के अनवरत जीवन संघर्ष की गाथा है। खेतीबारी को अपनी आजीविका के लिए अपनाने वाले किसानों के कुछ जीवन यथार्थो को अभिव्यक्त करने वाला उपन्यास पंजाब के विभाजन से उत्पन्न भयानक स्थितियों को भी रेखांकित करता है। आर्थिक असमानता से पैदा हुई यातनाएँ धर्म के हस्तक्षेप से और अधिक विकराल हो गयी हैं। गरीबी , निर्धनता, भूख, आदि के बीच भी मानवीय संवेदनाओं को बराबर रखने वाली आबो की भूमि पंजाब की जनता पर सांम्प्रदायिक दंगे अशनिपात हो जाते हैं। पवित्र चनाब और जेहलम में मनुष्य का रक्त बहते देखकर , अपनी जन्म-भूमि से अलविदा करने के मजदूर पंजाबियों की हृदय पीड़ा को कृष्णा सोबती ने मर्मस्पर्शी ढंग से अंकित किया है। धर्मांधता और साम्प्रदायिकता को आश्रय देने वाली शोषण व्यवस्था की पोलखोलने का प्रयास भी लेखिका ने किया है। सोबती ने यह भी दिखाने की कोशिश की है कि पीड़ाओं और यातनाओं के इस दौर में भी मानवीय प्रेम पूर्ण नष्ट नहीं हुआ है। इन सबका कच्चा चिट्ठा है 'जिन्दगीनामा'।

संम्पूर्ण पंजाब के अतीत और वर्तमान संस्कृति को उसकी पूरी गरिमा और संवेदना के साथ-साथ प्रेम और सांम्प्रदायिकता के विभिन्न पहलुओं को उद्घाटित करने वाली कृष्णा सोबती ने पूरी बीसवीं शताब्दी को अपनी रचना में उजागर किया है। पंजाब के माध्यम से मानवीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों को परखने का प्रयास है। 'जिन्दगीनामा' पंजाब के वर्तमान यथार्थ के साथ अतीत वैभव को भी उद्घाटित किया गया है। अविभाजित भारत में पंजाब की कृषक संस्कृति महाजनी व्यवस्था, हिन्दु-मुस्लिम संबंध, राग-द्वेष प्रेम, आदर, सत्कार, आदि मानवीय, आचार-विचार को पंजाबी शैली में प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास है 'जिन्दगीनामा।' ब्रिटिश भारत की वास्तविकता के साथ पंजाबी जाति के जातीय चरित्र के कलात्मक इतिहास की अभिव्यक्ति भी इसमें है।

विभाजन के द्वारा भारत को अपने हृदय को , याने विराट साझी संस्कृति को छेदना पड़ा था। यह घाव कभी न सूखनेवाला था। समय बीतने पर इसकी गहराई बढ़ती गयी। धर्माधारित यह विभाजन बाद में भारत के भीतर ही हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य के लिए कारण बन गया। ऐसे विकराल विभाजन के यथार्थ कारणों को ढूंढ निकालने का प्रयास भी है 'जिन्दगीनामा।' विभाजन का एहसास लेखिका को पहले ही होता है। इसलिए उनका मन सागर के किनारे डाली

हुई मछली की तरह तडपता रहता है। 'जिन्दगीनामा' में इसका मर्मस्पर्शी चित्रण है। गाँव में तीन सम्प्रदाय-हिन्दु-सिख-मुसलमान मिल जुलकर रहते हैं। उपन्यास में तीनों सम्प्रदायों के एक-एक क्रिया किलापों जैसे - सुबह उठने से लेकर शाम को सोने तक का मेल जोल-सहभाव जिन्दगीनामा में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

निष्कर्ष

'जिन्दगीनामा' कृष्णा सोबती की स्वंय पर आधारित साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कृति है। 'जिन्दगीनामा' शब्द से ही अर्थ स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है , जो 'जिन्दगीनामा' का अग्रदूत है। सर्वप्रथम लेखिका इस उपन्यास के माध्यम से अपने मनोभावों को व्यक्त करती है जो उनके जीवन के आदर्श रहे हैं। सरलीकरण इस उपन्यास का प्रमुख आवरण है। ' जिन्दगीनामा' ऐसे घर की कहानी है जो पंजाब की भूमि पर बसा है। इसमें पंजाब की भूमि पर कलकल करती, नदियाँ लहलहाती फसलों की भूमि , खेतो में अल्हड़ करती पंजाब की कुडियाँ व बच्चे तथा घर आंगन का सजरी , लिपाई से महकता , किशोरियों के विवाह की तैयारियाँ व कहीं कहीं पर जीवन की व उसीसे प्रेरित आध्यात्मिकता के साथ-साथ ग्रामीण जिन्दगी की इतनी बारीक संवेदनाओं तथा जीवन में प्रत्येक पहलु का सूक्ष्म चित्रण कृष्णा जी ने किया है। उपन्यास में कहीं कहीं , कचहरी, जमींदारी को भी केन्द्र में रखा है।

शहरी वातावरण से परे यह उपन्यास शिक्षा-दीक्षा छोड़ ग्रामीण परिवेश में ढला है। ग्रामीण सौन्दर्य की छटा लेखिका ने बखूबी बिखेरी है। इस प्रकार कृष्णा सोबती का 'जिन्दगीनामा' उपन्यास प्रेम - सौन्दर्य एवं ग्रामीण जीवन का अनमोल दस्तावेज है, जिसमें रिश्ते की खूबसूरत मौलिकता का अनुपम चित्रण हुआ है। रोहिणी अग्रवाल के शब्दों में "बस यही है वह स्थल जहाँ कृष्णा सोबती नाम रहकर प्रेरणा बन जाती है। संज्ञा न रहकर एक विशेषण है।"9

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *समकालीन महिला लेखन - डा॰ ओमप्रकाश शर्मा पृ.सं. 147*
2. *पंचशील त्रैमासिक शोधपत्रिका पृ.सं. 57-58 दिसम्बर-फरवरी*
3. *जिन्दगीनामा - कृष्णा सोबती पृ.सं. 147*
4. *जिन्दगीनामा - कृष्णा सोबती पृ.सं. 87*
5. *जिन्दगीनामा - कृष्णा सोबती पृ.सं. 312*
6. *जिन्दगीनामा - कृष्णा सोबती पृ.सं. 377*
7. *जिन्दगीनामा - कृष्णा सोबती पृ.सं. 268*
8. *समकालीन हिन्दी उपन्यास: समय और संवेदना डा॰ वीके अब्दुल जलील*
9. *रोहिणी, ''ऐलड़की।'' नया तेवर - नया मिजाज,'' एक नजर कृष्णा सोबत पर (दिल्लीः अखिल भारती 2000) पृ.सं. 9*